हिन्दी विभाग

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

उद्देश्य कथन

हिन्दी साहित्य का भारतीय तथा विश्व भाषाओं के साहित्य के साथ संवाद और तुलनात्मक अध्ययन एवं शोध इस विभाग की मुख्य गतिविधियाँ हैं। विभिन्न भाषाओं के साहित्य से संवाद की संभावनाओं का संधान एवं शोध विभाग की उच्च प्राथमिकता है। विभाग में ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों और कलाओं के साथ साहित्य के घनिष्ठ संबंध को दृष्टिगत रखते हुए अंतरानुशासनिक अध्ययन एवं शोध पर विशेष बल दिया जाता है। युवापीढ़ी को सहित्यिक रूप से संस्कारित करने हेतु विभाग सतत् कार्यरत है। हिन्दी विभाग समग्रता में साहित्य के अध्ययन-अध्यापन एवं शोध के लिए प्रतिबद्ध है।

संचालित पाठ्यक्रम

- बी. ए. - (सामान्य हिन्दी –आधार पाठ्यक्रम- कला, वाणिज्य वं विज्ञान संकाय)
- बी. ए. – हिन्दी साहित्य
- एम.ए. - हिन्दी
- एम.फिल. - हिन्दी
- पीएच.डी. - हिन्दी

परिचय

1962 ई. में मरुधरा की इस पावन भूमि पर देश के जाने माने दार्शनिक राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने जोधपुर विश्वविद्यालय का उद्घाटन किया था। विश्वविद्यालय स्थापना वर्ष में ही हिंदी विभाग का संचालन प्रारंभ हुआ। हिंदी विभाग के प्रथम अध्यक्ष के रूप में शीर्षस्थ आलोचक तथा कवि डॉ. रामशंकर शुक्ल 'रसाल' की नियुक्ति हुई। हिंदी विभाग को भारत भारती पुरस्कार से सम्मानित प्रो. कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह और हिंदी के प्रख्यात आलोचक प्रो.नामवर सिंह की अध्यक्षता का सौभाग्य प्राप्त हुआ। महाकवि सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का भी सक्रिय सहयोग विभाग को प्राप्त हुआ। इनके अतिरिक्त सुविख्यात आलोचक प्रो. मैनेजर पाण्डेय, प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित, लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यकार प्रो. रामप्रकाश दाधीच, काव्यशास्त्र मर्मज्ञ डॉ. वेंकट शर्मा, डॉ. चेतन प्रकाश पाटनी, तुलसी साहित्य के मर्मज्ञ प्रो. जगदीश शर्मा, लोक साहित्य एवं भाषा वैज्ञानिक प्रो. मदनराज डी मेहता तथा प्रो. सोहनदान चारण, हिन्दी की वरिष्ठ कवयित्री तथा राजस्थान साहित्य अकादमी से पुरस्कृत प्रो. सावित्री

डागा, बिहारी सम्मान से अलंकृत प्रख्यात कथाकार प्रोफेसर सत्यनारायण, काव्यशास्त्र, पाठालोचन एवं मध्यकालीन साहित्य के मर्मज्ञ डॉ. पूर्णदास तथा प्रो. देवेन्द्रकुमार सिंह गौतम, प्रसिद्ध आलोचक व कवि प्रो. कौशलनाथ उपाध्याय, प्रो. रामबक्ष जाट तथा प्रो. सूरजप्रसाद पालीवाल ने भी विभाग को सुशोभित किया। प्रारंभिक दौर से ही देश के वरिष्ठ साहित्यकारों तथा आलोचकों का सान्निध्य विभाग को प्राप्त हुआ। नींव मजबूत हो तो भवन स्वतः ही सुदृढ़ हो जाता है, इसी सिद्धान्त के अनुरूप हिंदी विभाग निरन्तर अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज कराता आया है। राष्ट्रभाषा के उन्नयन एवं हिंदी साहित्य और भाषा के विकास हेतु विभाग अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए सतत् कार्यरत है। विभाग में वर्तमान में 3 प्रोफेसर 1 एसोशिएट प्रोफेसर तथा 13 असिस्टेंट प्रोफेसर कार्यरत हैं।

प्रोफेसर		**विषय विशेषज्ञता**
1.	डॉ. नरेन्द्र मिश्र (**अध्यक्ष**)	समकालीन साहित्य, पत्रकारिता,आलोचना
2.	डॉ. किशोरीलाल रैगर	कथा साहित्य, दलित विमर्श, पत्रकारिता
3.	डॉ. श्रवण कुमार मीणा	कथा साहित्य, आदिवासी साहित्य
एसोशिएट प्रोफेसर		
1.	डॉ. महीपाल सिंह राठौड़	मध्यकालीन एवं लोक साहित्य, पत्रकारिता
असिस्टेंट प्रोफेसर		
1.	डॉ. श्रवण कुमार	मध्यकालीन साहित्य, भाषा विज्ञान
2.	डॉ. कुलदीप सिंह मीणा	कथा साहित्य, आदिवासी साहित्य
3.	डॉ. कीर्ति माहेश्वरी	कथा साहित्य, स्त्री विमर्श
4.	डॉ. प्रेमसिंह	मध्यकालीन साहित्य, पाठालोचन
5.	श्री महेन्द्र सिंह	लोक साहित्य, काव्यशास्त्र
6.	डॉ. कामिनी ओझा	लोक साहित्य, कथा साहित्य
7.	डॉ. विनिता चैहान	मध्यकालीन साहित्य, पाठालोचन
8.	डॉ. मीता सोलंकी	कथा साहित्य, स्त्री विमर्श
9.	डॉ. कमला चैधरी	कथा साहित्य, स्त्री विमर्श
10.	डॉ. भरत कुमार	कथा साहित्य, काव्यशास्त्र एवं पत्रकारिता
11.	डॉ. प्रवीण चन्द	कथा साहित्य, दलित विमर्श
12.	श्री फत्ताराम नायक	लोक साहित्य, मध्यकालीन काव्य
13.	डॉ. अरविन्द कुमार जोशी	कथा साहित्य, लोक साहित्य

वर्तमान में स्नातकोत्तर कक्षाओं में 80 प्रवेश स्थान है, स्नातक कक्षाओं में हिंदी भाषा के 4000 तथा हिंदी साहित्य के 1700 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। स्नातकोत्तर कक्षाओं में हर वर्ष विभागीय छात्र

परिषद का गठन किया जाता है जिससे वर्षभर संचालित होने वाली शैक्षणिक एवं सहशैक्षणिक गतिविधियों में छात्रों की सक्रिय सहभागिता बनी रहती है।

विभाग के पूर्व छात्र के रूप में पूर्व राज्यसभा सदस्य **पद्मभूषण श्री नारायण सिंह माणकलाव** के अतिरिक्त अनेक शिक्षा एवं भाषाविद्, भारतीय तथा राज्य प्रशासक, न्यायविद, पत्रकार तथा लेखक देश विदेश में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

शोध

विभाग से 1250 से अधिक विद्यार्थी पी-एच.डी. शोध उपाधि 55 एम. फिल. शोध उपाधि 05 डी. लिट. शोध उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। विभाग में शोध विषयों की सीमा केवल हिंदी तक सीमित न होकर अन्तरअनुशासनात्मक भी रही है। जिससे वर्तमान संदर्भों की जरूरतों तथा नवीन साहित्यिक विमर्शों को विश्लेषित करने का महत्वपूर्ण कार्य विभाग के शोधार्थियों द्वारा किया गया।

विभाग में सौन्दर्य-शास्त्र, नाटक और रंगमंच, भाषा विज्ञान, लोक साहित्य, अनुवाद और पत्रकारिता, पाठालोचन, साहित्य का इतिहास, प्रयोजनमूलक हिंदी, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र, इतिहास-दर्शन तथा समकालीन भारतीय साहित्य, तुलनात्मक साहित्य, नव विमर्श (दलित, आदिवासी, स्त्री विमर्श, प्रवासी साहित्य) जैसे आधुनिक विषयों के अध्यापन एवं शोध की व्यवस्था उपलब्ध है।

संगोष्ठी आयोजन

विभाग ने राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया है -

राष्ट्रीय

- सूर पंचशती समारोह — 23 अप्रैल, 1979
- निराला संगोष्ठी
- भारतीय भाषाओं में जीवनी साहित्य और आत्मकथा — 01 से 04 दिसम्बर, 1987
- हिन्दीभाषी प्रदेशों का लोकसाहित्य और लोकसंस्कृति — 04-05 मार्च, 2000
- साहित्य और इतिहास — 01-02 दिसंबर, 2001
- आधुनिक हिन्दी कविता: तब, अब और आगे — 25- 26 मार्च, 2008
- समकालीन हिन्दी साहित्य में आदिवासी विमर्श — 12-13 जनवरी, 2011
- 21 वीं सदी की चुनौतियाँ : मीडिया और साहित्य — 25- 26 फरवरी, 2012

- निर्गुण संत परम्परा : वर्तमान संदर्भ 10 - 11 मार्च, 2013
- आदिवासी साहित्य और समाज 30-31 मार्च, 2013
- डिंगल काव्य-परम्परा और सामयिक संदर्भ 12-13 फरवरी, 2014
- आदिवासी लेखन :अस्तित्व और अस्मिता का सवाल 8-9 मार्च, 2014
- लोक सांस्कृतिक परम्परा एवं सामयिक संदर्भ 5-6 दिसम्बर, 2014
- भारतीय भाषाओं के साहित्य में भारतीय मूल्य 6-7 मार्च, 2016
- हिन्दी कथा साहित्य: नई सदी का स्वर 11-12 फरवरी, 2017
- हिन्दी कथा साहित्य में आंचलिकता 25-26 फरवरी, 2019
- महात्मा गाँधी का साहित्य, समाज एवं राजनीति पर प्रभाव 03 मार्च, 2019
- हाशिए का साहित्य, समाज और संस्कृति 16-17 मार्च, 2019

अन्तरराष्ट्रीय

- समकालीन विमर्श सामाजिक, सांस्कृतिक परिदृश्य 10-11 जनवरी, 2015
- स्वाधीनता संग्राम में राष्ट्रीय काव्यधारा के कवियों का अवदान 25-26 मार्च, 2018

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में आयोजित कार्यशालाएँ

- तकनीकी माध्यमों में हिन्दी अनुप्रयोग की सम्भावनाएँ 9- 10 जनवरी 2004
- तकनीकी व इजीनियरिंग शब्दावली कार्यशाला 17-18 दिसम्बर 2005
- संचार माध्यमों में हिन्दी अनुप्रयोग 1-2 फरवरी 2008
- उच्च शिक्षा में तकनीकी शब्दावली का प्रयोग 27-28 मार्च 2016

आदि प्रमुख हैं। इसके साथ ही विभागीय सदस्यों ने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भागीदारी निभाई

पुनश्चर्या पाठ्यक्रम

विभाग ने 21 पुनश्चर्या पाठ्यक्रम विभाग एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तत्वावधान में आयोजित किए हैं तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मानव संसाधन विकास केन्द्र के तत्त्वावधान में एक आमुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किया है।

शोध परियोजना

- डॉ.सूरजप्रसाद पालीवाल के निर्देशन में एक वृहद शोध परियोजना पूर्ण।
- प्रो. श्रवण कुमार मीणा के निर्देशन में एक वृहद शोध परियोजना "समकालीन हिंदी कहानी-आदिवासी संदर्भ" विषयक पूर्ण ।
- लघु शोध परियोजना के अन्तर्गत विभाग के अनेक प्राध्यापकों द्वारा कार्य किया जा रहा है।

वर्तमान में विभाग के 50 शोधार्थियों को JRF-SRF प्राप्त है तथा कुल 220 विद्यार्थी राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) में उत्तीर्ण हो चुके हैं। 5 विद्यार्थियों ने PDF के रूप में भी शोध कार्य सम्पूर्ण किया है।

भावी योजनाएँ

- रूसा के आर्थिक सहयोग से स्वतंत्र रूप से हिंदी भवन का निर्माण
- पूर्व छात्र परिषद (एलुमनि) का गठन करना
- हिंदी विभाग से शोध पत्रिका का प्रकाशन करना
- भक्त शिरोमणि मीराबाई तथा प्रेमचंद के नाम से अध्ययन शोध पीठों की स्थापना की योजना
- नामवर सिंह व्याख्यानमाला का पुन:संचालन करना
- विभागीय स्तर पर पाठ्य पुस्तकों का निर्माण व प्रकाशन करना
- महान साहित्यकार अज्ञेय का चित्र व उनके परिचय युक्त बोर्ड का निर्माण करवा कर विभाग में स्थापित करना
- वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल अधुनातन विषयों के पाठ्यक्रमों का संचालन यथा - तुलनात्मक साहित्य, अनुवाद साहित्य, हाशिये का साहित्य आदि को सम्मिलित करना
- उपलब्ध साहित्यकारों तथा विद्वानों के विशेष व्याख्यान
- महीने में कम से कम एक बार छात्र संवाद अथवा गोष्ठी का आयोजन
- विलुप्त होते हस्तलिखित ग्रंथों का सर्वेक्षण, संपादन तथा प्रकाशन
- विलुप्त होते लोक साहित्य का सर्वेक्षण, संकलन व प्रकाशन
- यू.जी.सी., आई.सी.एस.एस.आर. के सहयोग से विभाग में शोध परियोजनाओं का संचालन